International Journal of Applied Research 2018; 4(1): 459-461

**ISSN Print:** 2394-7500
**ISSN Online:** 2394-5869
**Impact Factor:** 5.2
IJAR 2018; 4(1): 459-461
www.allresearchjournal.com
Received: 29-10-2017
Accepted: 31-11-2017

**डॉ. भारती निश्छल**
गंगवारा, सारामोहनपुर, दरभंगा, बिहार, भारत

**Corresponding Author:**
**डॉ. भारती निश्छल**
गंगवारा, सारामोहनपुर, दरभंगा, बिहार, भारत

# 'सर्वंसहा': हिन्दी का एक अनुपम राम–काव्य

## डॉ. भारती निश्छल

**सारांश**
हिन्दी–राम–काव्यधारा की आधुनिककालीन कृति 'सर्वंसहा' डॉ० रमाकान्त पाठक की एक महत्त्वपूर्ण काव्य–पुस्तक है। इसमें राम–कथा के उन प्रसंगों और सन्दर्भों से सम्बन्धित प्रश्नों के उत्तर प्रस्तुत किये गये हैं, जिनके उत्तर 'रामचरितमानस' एवं अन्य राम–काव्यों में नहीं मिलते हैं। सीता के बाल–चरित से सम्बन्धित प्रसंगों के आपात रमणीय स्थल भी इस कृति में द्रष्टव्य हैं। याज्ञवल्क्य–आश्रम के पशु–पक्षियों के प्रति सीता का प्रेमपूर्ण व्यवहार, सीता के पुत्र–द्वय लव और कुश की बाल–सुलभ जिज्ञासाएँ और उनके उत्तर एवं सीता की अग्नि–परीक्षा से सम्बन्धित प्रश्नों के सर्वथा नूतन उत्तर इस कृति में कवि ने प्रस्तुत किये हैं। यह कृति हिन्दी का सम्भवतः प्रथम स्वगतोक्तिपरक आत्मसम्भाषात्मक राम–काव्य है, जिसे अँगरेजी में 'मोनोलॉग' कहा जाता है, जिसमें सीता अपनी कथा स्वयं कहती है और स्वयं से कहती है।

**प्रस्तावना**
'सर्वंसहा' हिन्दी–राम–काव्यधारा की एक आधुनिककालीन कृति है। इसके रचयिता हैं डॉ० रमाकान्त पाठक, जो छन्दः शास्त्र [1], काव्यशास्त्र और भाषाविज्ञान के मूर्धन्य विद्वान्, उच्चकोटिक मौलिक चिन्तक [2], निबन्धकार [3], नाटककार [4] और भारतीय धर्म–संस्कृति के साधक–संरक्षक [5] के रूप में मिथिलाञ्चल के विद्वद्वर्ग में सर्वमान्य हैं। कवि के रूप में इन्होंने जिन 'इदमग्नये' [6], 'पूर्णिमा' [7], 'अंगुलिमाल' [8], 'बिंबिसार' [9], 'यशोधरा' [10], 'आम्रपाली' [11], 'तथागत' [12], 'राजगृह' [13], 'ईशपुत्र' [14], 'सर्वंसहा' [15], 'प्रेमपुरुषोत्तम' [16] और 'हिन्दी गीताई' [17] की रचना की है, उनके अवलोकन से स्पष्ट होता है कि वैदिककालीन साहित्य से लेकर राम, कृष्ण, बुद्ध और ईसा मसीह जैसे अनेक महापुरुषों से सम्बन्धित विभिन्न चरित्रों पर आधारित काव्यकृतियाँ इन्होंने प्रस्तुत की हैं। ये ग्रंथ डॉ. पाठक की बहुज्ञता के भी प्रमाण हैं और उनके सर्वधर्मसमभाव और विश्व–धर्म–संस्कृति–संरक्षा के प्रयत्नों के भी। 'सर्वंसहा' उनके ऐसे ही पुनीत प्रयत्नों की एक कड़ी है।
राम–कथा भारतीय साहित्य का मुख्य उपजीव्य रही है। वैदिक–कालीन साहित्य को छोड़ भी दिया जाय, जिसमें भी रामकथा से संबद्ध स्पष्ट संकेत मिलते हैं, तब भी आदिकवि वाल्मीकि की 'रामायण' से लेकर डॉ० रमाकान्त पाठक की 'सर्वंसहा' तक राम–कथा से सम्बन्धित साहित्य की एक सुदीर्घ परम्परा संस्कृत, पालि, प्राकृत, अपभ्रंश और हिन्दी आदि आधुनिक भारतीय भाषाओं में प्राप्त होती है। राम–कथा से सम्बद्ध साहित्य–लेखन में संस्कृत के वाल्मीकि और व्यास, अपभ्रंश के स्वयंभू, हिन्दी (अवधी) के तुलसी और खड़ी बोली हिन्दी के महाप्राण 'निराला' सर्वाधिक स्मरणीय–उल्लेखनीय हैं। राम–साहित्य की सुदीर्घ परम्परा के इन प्रकाश–स्तम्भों के अवलोकन के पश्चात् राम–साहित्य–लेखन के लिए कलम उठाना दुस्साहस अथवा पिष्टपेषणा नहीं है क्या? प्रथम दृष्ट्या ऐसा ही प्रतीत होता है। डॉ० पाठक ने 'सर्वंसहा' की भूमिका में स्वयं भी इस प्रश्न पर विचार किया है और मातृ–ऋण से उद्धार के लिए ही इस कृति की रचना की आवश्यकता प्रतिपादित की है। [18] किन्तु इस महत्त्वपूर्ण कृति की आवश्यकता राम–कथा के उन असंख्य पाठकों के लिए भी थी, जिनके मानस में राम–कथा के अनेक प्रसंग–विशेषों से सम्बद्ध प्रश्न अपने समुचित और तर्कयुक्त उत्तर के लिए आज भी तैर रहे हैं। इस कति का आस्वादन हिन्दी के असंख्य उन पाठकों को भी आह्लादित करेगा, जो सीता की प्रारंभिक जीवन–चर्या और उनके 'बाल–चरित' से अद्यावधि अनभिज्ञ हैं। संभव है, सीता के बाल–चरित से सम्बन्धित प्रसंग कुछ अध्येताओं को 'विचारित सुस्थ' नहीं प्रतीत हों, किन्तु वे 'आपात रमणीय' तो हैं ही और 'आपात रमणीयता' को ही राजशेखर, रुद्रट और कुन्तक आदि अधिकतर काव्यशास्त्रियों ने काव्य का अपरिहार्य तत्त्व माना है।
'सर्वंसहा' के पाँचवें खण्डांक में सीता के कतिपय आपात रमणीय बाल–चरित्रों का सहृदय–आह्लादक वर्णन है। सीता के पिता सीरध्वज जनक अपने आरण्यक–गुरु याज्ञवल्क्य के यज्ञवन गाँव ('जगवन गाँव', जो कमतौल रेलवे स्टेशन से कुछ ही दूरी पर स्थित है) स्थित वट–आश्रम में प्रतिदिन उनकी सेवा करने पैदल ही जाते थे। एक दिन बाल–हठ मानकर वे सीता को भी ले गये थे। वहीं याज्ञवल्क्य एवं उनकी दोनों पत्नियों, कात्यायनी और मैत्रेयी–से उनकी

पहली भेंट हुई थी और उनसे आशीर्वाद भी प्राप्त हुए थे। उस कुटी में बालिका सीता के पहुँचते ही आश्रम के पशु–पक्षियों के छोटे–छोटे बच्चे कैसे सीता के साथ लग जाते हैं एवं बालिका–सीता माँ कात्यायनी और मैत्रेयी के साथ मिलकर किस प्रकार उन्हें 'पत्र, तृण, फल, कण, दाना–पानी' आदि देकर तुष्ट करती हैं, इसका मनोरम वर्णन कवि ने इन शब्दों में किया है :

**''ऋषि ने कहा,'' मिलो दोनों माँ से, कुटिया में जाकर,**
**हम करते हैं बात; लौट आओ तुम भी पी–खा कर।''**
**सुन, छूमन्तर हुई कुटी की ओर; साथ लग आया**
**दौड़ एक मृग–बालय मगर उसने तो मुझे हराया!**

**देवदारु के तरु से उतरी, तभी तीन गिलहरियाँ,**
**हरसिंगार से पाँच कबूतरय पाँचो उजली परियाँ!**

**तब तक दो खंजन उतरे, कर कृष्ण काक को साथ,**
**बेटी माँ, हम तीनों ने मिल, बाँटे भर–भर हाथ–**
**जिनके थे जो भाग;– पत्र, तृण, फल, कण, दाना–पानी,**
**वे जब चले गये खा–पीकर, तुष्ट हुए हम दानी।'' [19]**

पुनः माँ कात्यायनी और मैत्रेयी द्वारा बेटी सीता को दिये गये जीवनोपयोगी उपदेश एवं उनके द्वारा की गई सीता की भाव–भीनी विदाई का भी वर्णन कवि ने इसी खण्डाङ्क में किया है।

राम–कथा के अध्येताओं को 'सर्वंसहा' के अध्ययन से पूर्व लव–कुश की उस बाल–सुलभ, किन्तु अति महत्त्वपूर्ण, जिज्ञासा की भी जानकारी नहीं मिल सकी थी, जिसके द्वारा महर्षि वाल्मीकि से न केवल छोटे–बड़े, ब्राह्मण–शूद्र, सुर (विप्र) और असुर आदि के साथ बरते जाने वाले भेद–भाव के कारणों पर प्रकाश डालने का निवेदन किया गया है, अपितु बालक–द्वय ने पति को 'आर्यपुत्र' और पत्नी को 'दासी' कहने के कारणों को भी जानना चाहा है–

**''पूछा लव–कुश ने "महर्षिवर कवे, कौन वह माप,**
**जिससे हुए बड़े छोटे के भेद अनाप–सनाप?**
**रावण ब्राह्मण हुए, शूद शंबूक हुआ बेचारा,**
**हिंसक सिंह हुआ राजा, मृग गया अहिंसक मारा।**
**पति को कहते आर्यपुत्र क्यों, पत्नी क्यों कर दासी?**
**नगर–निवासी सभ्य, रीछ–कपि क्यों सूधे वन–वासी?**
**क्यों अवध्य हैं विप्र, असुरगण क्यों हैं वध्य कि सारे**
**इस विभेद के कारण पर हम सोच–सोच कर हारे।'' [22]**

महर्षि वाल्मीकि ने लव–कुश के प्रश्नों के जो उत्तर दिये हैं, वे भी अत्यन्त सारगर्भित, तार्किक, बुद्धि–सम्मत और सार्वकालिक हैं। कवि के अनुसार, कृतयुग में न तो छोटे–बड़े का भेद था, न ही शासक–शासित का। सर्व–जीव–सम– भाव; सत्य–सनातनधर्म, प्रेम, करुणा और ऋत से सब–के–सब परिचालित थे, यह तो सात्विक त्रेता के बाद राजस और तामस त्रेतायुग में सारे भेद–भाव उपजे और समाज में फैल गये–

**''कृतयुग ने पा यज्ञ, सांख्य को जब था योग बनाया,**
**तब औरों को कर छोटा, बन जाना बड़ा न आया।**
**शासक–शासित का न भेद था शोषण था अज्ञात,**
**जीवन श्वेतकमल–सा मधुमय, धरती पंकज–पात।**
**सर्व–जीव–सम–भाव अभयकर रवि–प्रकाश–सा फैला,**
**आत्म–रूप अद्वैत–भाव क्योंकर होता फिर मैला?'' [23]**

**''वह सात्त्विक अनुयुग त्रेता का बीता, राजस आया,**
**बल का हुआ प्रभुत्व रहा वन में विवेक छिप, छाया।**
**जो बलिष्ठ वह नृपति, उसी के अनुगत अन्य बली थे,**
**रक्षक बल क्षत्रिय थे। भक्षक बल भी दस्यु, छली के। [24]**

**''तब आया तामस अनुयुग त्रेता का परम प्रचण्ड,**
**बलियों के पोषक, निर्बल जन के शोषक उद्दण्ड–**
**धनी, सेठ, सामन्त छली, पापों के कंचन–पाश**
**जिनके अनुगत हुए 'श्रेष्ठ' द्विज (!) अन्य दस्यु या दास!**

**नारी भी हो गयी पण्य, संग्रह की वस्तु सयानी,**
**महिला अबला बनी, गई 'कोमल सुन्दरता' छानी।**
**शील, रूप, गुण, बुद्धि– सभी की कीमतय वे भी "चीज"।**
**गढ़–गढ़ झूठ प्रवाद मधुर सब गये सत्य पर खीज। [25]**

कवि की मान्यता है कि इस तामस अनुयुग में ही पुरुषोत्तम राम का अवतार हुआ था और उन्होंने स्वधर्माचरण, श्रम, ब्रह्म–भाव और मर्यादा के द्वारा धरती पर धर्म की पुनर्स्थापना का प्रयास किया। [26]

'सर्वंसहा' के तीसरे एवं अन्य खण्डाकों में राम–कथा के अध्येताओं के मानस में तैर रही इस जिज्ञासा का भी समाधान प्रस्तुत किया गया है कि श्रीराम की लंका–विजय के पश्चात् अग्नि–परीक्षा उत्तीर्ण कर चुकी सीता को, एक धोबी द्वारा गढ़े गये प्रवाद के कारण, गर्भवती रहने की स्थिति में भी, को वनवास क्यों दिया गया? एक धोबी के द्वारा गढ़े गये प्रवाद ने ही अयोध्या की सारी अथवा अधिकांश जनता का मत क्यों मान लिया गया?[(27)] आखिर क्या कारण था कि राम–रावण–युद्ध में राम की सहायता करने किष्किन्धा से बन्दर–भालू और कोल– निषाद तो आये, पर अयोध्या से रामभक्त भरत की क्षत्रिय–सेना नहीं आई? इसी तरह सीता–निर्वासन के निर्णय के विरोध में, सीता के तीनों देवरों और तीनों सासों की तरह, सीता की तीनों बहनों ने भी, कुछ कहने या करने की आवश्यकता का अनुभव क्यों नहीं किया? राजा राम के उस निष्ठुर निर्णय के विरोध में केवल अयोध्या की जनता ने ही नहीं, मिथिला की जनता ने भी कोई विद्रोह क्यों नहीं किया?.....'सर्वंसहा' में इन तमाम प्रश्नों पर विचार करने के अवसर आये हैं। मगर यह आवश्यक नहीं कि उन तमाम प्रश्नों के उत्तर से 'सर्वंसहा' के सभी पाठक, एकही तरह से लेखक कें साथ सहमत या असहमत हो जायँ। [28]

'सर्वंसहा' हिन्दी का एक अनुपम राम–काव्य इसलिए भी है कि यह खड़ी बोली हिन्दी का संभवतः अकेला स्वगतोक्तिपरक आत्मसंभाषात्मक राम–काव्य है। अंग्रेजी में इस विधा को 'मोनोलॉग' कहा जाता है। इसमें सीता अपनी कथा स्वयं कहती है और स्वयं से कहती है। इस कृति के अन्त में उपस्थापित 'उत्तर–सूत्र' [29] 'रामचरितमानस' के पश्चात् 'सर्वंसहा' में ही प्राप्त होता है। यूनानी पद्धति के 'एपिलॉग' की तरह इस 'उत्तर सूत्र' में भी कवि ने अतीत की कथा में वर्तमान की परिस्थितियों और भविष्यत् की सम्भावनाओं को पहचानने के लिए विहंगावलोकन की प्रक्रिया का अवलम्बन किया है। यों तो 'उत्तर–सूत्र' का पूरा स्वारस्य उसके समग्र अध्ययन से ही प्राप्त हो सकता है, किन्तु बानगी के तौर पर उसकी अधोलिखित पंक्तियाँ प्रस्तुत की जा रही हैं :

**"पर यह वृत्त पुराना ही, रह–रह, हो नया, उघरता,**
**ऋषि पहले ही कह देते, फिर, काल प्रमाणित करता।**
**रामकथा फिर वही, नई हो–हो, शतकोटि अपार।**
**युग भी नया, जिसे बाबा कह गये : 'राम–अवतार'।**
**पुनः दशेन्द्रिय–दास, दसो दिशि, दशमुख नृप हो बैठे**
**शूर्प–नखा की किंकर–सेना के सेनापति ऐंठे।**
**सुनते–गुनते न ही, किये जाते केवल मनमानी**
**देवनार से दिल्ली तक बन गया खून ही पानी। [30]**

**ध्रुव से ध्रुव तक एक देश था, एक देश फिर होगा,**
**भोगी जनक विदेह व्रती हलधर–नरेश फिर होगा।**
**शस्त्र, शास्त्र, दो डालय प्रेम के रण में तो पिटना है।**
**विश्व–राज्य के हित हर संप्रभुता को मर मिटना है।** [31]

वस्तुतः विश्व–धर्म, विश्व–राज्य, और विश्व–ब्रहम–भाव की स्थापना का प्रयासी यह कृति हिन्दी–साहित्य–माला का एक अनुपम पुष्प है और हिन्दी–राम–कथा के, विशेष रूप से 'उत्तर–रामकथा' के कई अनसुलझे प्रश्नों के उत्तर प्रस्तुत कर मिथिलांचल के इस महान् कवि ने हिन्दी–जगत् का अप्रतिम उपकार किया है।

## निष्कर्ष

'सर्वसहा' मिथिलांचल के आधुनिककालीन हिन्दी–कवि डॉ० रमाकान्त पाठक की एक प्रसिद्ध कृति है। बहुमुखी प्रतिभा–सम्पन्न डॉ० पाठक ने इस कृति के माध्यम से राम–कथा के उन अनसुलझे प्रश्नों के उत्तर देने का प्रयास किया है, जिनके उत्तर 'रामचरितमानस' एवं अन्य राम–काव्यों में नहीं मिलते हैं। सीता के बाल–चरित, गुरु याज्ञवल्क्य के आश्रम में गुरुमाताओं से शिक्षा की प्राप्ति, गुरु–आश्रम के पशु–पक्षियों के प्रति सीता का स्नेहपूर्ण व्यवहार, स्त्री–पुरुष, छोटे–बड़े, ब्राह्मण–शूद्र, सुर और असुर आदि में भेदभाव–विषयक सीता–पुत्र लव–कुश के प्रश्न और महर्षि वाल्मीकि के उत्तर, सीता की अग्नि–परीक्षा एवं गर्भवती सीता के वनवास से सम्बन्धित जिज्ञासाओं के उत्तर जैसे अनेक अनसुलझे प्रश्नों के तर्कपूर्ण और मनोरम उत्तर डॉ० पाठक ने प्रस्तुत किये हैं। विश्वधर्म, विश्वराज्य और विश्व–ब्रह्मभाव की स्थापना का प्रयास करनेवाली यह कृति अपनी उस शैली के कारण भी अनुपमेय है, जिसे स्वगतोक्तिपरक आत्मसंभाष अर्थात् 'मनालॉग' के नाम से जाना जाता है। इसके 'उत्तरसूत्र' में कवि ने 'रामचरितमानस' की भाँति अतीत की कथा में वर्त्तमान की परिस्थितियों और भविष्यत् की सम्भावनाओं को रेखांकित करने की भी चेष्टा की है। एक विचार–काव्य के रूप में यह कृति अप्रतिम है।

## संदर्भ–संकेत


1. छन्दःशास्त्र पर डॉ० पाठक का शोध–प्रबन्ध 'दोहा छन्द का उद्भव और विकास' विद्वानों के बीच आज भी अद्वितीय और अद्भुत पाण्डित्यपूर्ण माना जाता है।
2. उनके उच्चकोटिक मौलिक चिन्तन के प्रमाण स्वरूप उनके ग्रंथों की भूमिकाएँ, विशेष रूप से 'ईशपुत्र' नाम्ना उनकी काव्यकृति की भूमिका (निवेदन) अवलोकनीय है, जो चार सौ छप्पन पृष्ठों की है एवं जिसे ल.ना. मिथिला विश्वविद्यालय के स्नातकोत्तर हिन्दी–विभाग की हिन्दी–साहित्य परिषद् के अध्यक्ष ने 'आनेवाले अवतार युग' का 'घोषणा–पत्र' (मैनिफेस्टो) बताया है। (द्रष्टव्यः 'ईशपुत्र' : डॉ. रमाकान्त पाठक, 'प्राक्कथन', पृ० ख, प्रकाशक–भारतीभवन, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, प्र. सं.–1984 ई.)
3. निबन्धसंग्रह के रूप में इनकी कृति 'मणिपुष्पक' एक समादृत ग्रंथ है। इसके अतिरिक्त 'शिक्षा के क्षेत्र में भाषा का सवाल', 'शुक्ल–साहित्य के पार्श्ववर्ती विक्षेप–जैसे इनके अन्य निबन्ध भी 'श्लोक' प्रकाशन, कानपुर से सन् 2007 में प्रकाशित हुए हैं।
4. 'राजकुमार सिद्धार्थ' इनका प्रकाशित नाटक है।
5. 'विचार–साधना', 'संस्कृतामत कसम' एवं इनके अन्य अनेक ग्रन्थों में भारतीय धर्म–संस्कृति की साधना और संरक्षा के तत्त्व द्रष्टव्य हैं।
6. "नेशनल पब्लिशिंग हाउस'', नयी दिल्ली से प्रथमतः 1979 में प्रकाशित जिसमें वैदिक ऋचाओं और धर्म–संस्कृति–सम्बन्धी कविताएँ संकलित हैं।
7. नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नयी दिल्ली से प्रथमतः 1980 में प्रकाशित, जिसमें विविध विषयक कुल 51 कविताएँ संकलित हैं।
8. यह बौद्ध–साहित्य के कुख्यात दस्यु–चरित्र अंगुलिमाल से सम्बन्धित कथाकाव्य है, जिसका प्रकाशन प्रथमतः 'प्रज्ञा–प्रकाशन' शाहपुर पटोरी, समस्तीपुर से हुआ था।
9. प्रकाशक–हिन्दी साहित्य परिषद्, हिन्दी विभाग, ल.ना. मि. विश्वविद्यालय दरभंगाः प्रथम संस्करण–विक्रम संवत् 2038.
10. प्रकाशक मोतीलाल बनारसीदास, पटना, दिल्लीय प्रथम संस्करण, 1981 ई.
11. प्रकाशक मोतीलाल बनारसीदास, पटना, दिल्लीय प्रथम संस्करण, 1981 ई.
12. प्रकाशक मोतीलाल बनारसीदास, पटना, दिल्लीय प्रथम संस्करण, 1981 ई.
13. सुरेखा प्रकाशन, पुरानी बाजार मुजफ्फरपुर प्र. संस्करण, 1988 ई०
14. भारती भवन, लीडरप्रेस, इलाहाबाद प्रथमतः सन् 1984 ई.में प्रकाशित।
15. प्रकाशक–शबरी संस्थान, शाहदरा, दिल्ली, प्रथम संस्करण–1988 ई.
16. सुरेखा प्रकाशन, पुरानी बाजार मुजफ्फरपुर, प्र०सं० 1988 ई०
17. सुरेखा प्रकाशन, पुरानी बाजार मुजफ्फरपुर, सं० 1987 ई०
18. 'रामचरितमानस' के बाद, हिन्दी–साहित्य के पाठकों को क्या किसी अन्य रामायणी– कथा की आवश्यकता थी? इस प्रश्न का कोई भी उत्तर विवादास्पद होगा। इसीलिए, 'राम की शक्तिपूजा' के रचयिता महाकवि और महाप्राण पं. सूर्यकान्त त्रिपाठी को कृतज्ञतापूर्वक प्रणति अर्पित करके ही, मैं संकोचपूर्वक इस प्रश्न का उत्तर दूंगा– 'नेति'।
19. फिर यह कृति क्यों आ टपकी? किसका उद्धार करने के लिए?.....अपने उद्धार के लिए? हाँ, संभवतः मातृण से अपने ही उद्धार के लिए!'' 'सर्वसहा'; रमाकान्त पाठक, भारतीभवन, पटना, द्वि. सं. 1989, 'निवेदन', पृष्ठ–(ङ)–(च)।
20. 'सर्वसहा' : डॉ. र. का. पाठक, पृ० 29–30
21. उपरिवत्, पृ० 31–32
22. उपरिवत्, पृ० 32
23. 'सर्वसहा', 1989, पृ० 37.
24. उपरिवत्, पृ० 38.
25. उपरिवत्, पृ 39.
26. 'सर्वसहा', 1989, पृ० 40
27. उपरिवत्, पृ० 40–41.
28. उपरिवत् पृ० 17 से 22 तक।
29. 'सर्वसहा' का निवेदन, पृ० ञ।
30. 'सर्वसहा' पृ० 66 से 70 तक।
31. 'सर्वसहा', 1989, पृ० 67.
32. उपरिवत्, पृ० 68.